thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 5
मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी
विक्रम संवत् 2071
कलि संवत् 5115
5 से 21 दिस., 2014
दयानन्दाब्द : 190
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,115
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाइपास , जयपुर
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : **PRINTPACK, Jaipur**
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रूपया
सहायता शुल्क : 100 रूपया

संस्कृत का प्रतिवाद राष्ट्रहित में नहीं है

सम्पादकीय

अखिल भूमण्डल के भाषाविज्ञानी जिस भाषा को समस्त भाषाओं की जननी स्वीकार कर रहे हैं, इसी संस्कृत भाषा में विश्व की प्राचीनतम पुस्तक 'ऋग्वेद' विश्व के पुस्तकालयों को सुशोभित कर रही है। मानव संस्कृति एवं जीवन मूल्यों को आज तक अनुप्राणित करने वाली संस्कृत भाषा अपने ही राष्ट्र में स्वकीय अस्तित्व रक्षण के लिए संघर्षरत है। संस्कृत से ही संस्कृति है और संस्कृति मानव अस्तित्व का आधार है। ऐसे में यदि हमारी सरकार, हमारे प्रबुद्ध नागरिक संस्कृत के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए प्रयासरत नहीं होगें तो आने वाली भयावह स्थितियों का हम सहज ही अनुमान लगा सकते हैं। हमारी सरकारें हमारे विद्यार्थियों को विदेशी भाषाओं का प्रशिक्षण देने में करोडों रूपये व्यय कर रही हैं, पाश्चात्य भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास किये जा रहे हैं। इस प्रकार की एक घटना उन्नीसौ सत्तर के दशक में घटी, इस दौरान अमेरिका द्वारा भारतीय विश्वविद्यालयों में कार्यरत अग्रेंजी भाषा के प्रोफेसरों को आमान्त्रित किया गया। कुछ दिनों चली परिचर्चा में यह निष्कर्ष निकाला गया कि भारतीय विश्विद्यालयों में अमेरिकी साहित्य पढ़ाया जाए। परिणाम स्वरूप राजस्थान विश्वविद्यालय सहित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर पर अमेरिकी साहित्य को पाठ्यक्रम से समायोनित कर लिया जाए। इस भाषायी षड़यन्त्र को हमें पहचानना होगा, हमारी उदासीनता में यह भाषायी षड़यन्त्र औपनिवेशिक संस्कृति की मृतप्राय अमरबेल को पुनः नवजीवन प्रदान कर देगा। विदेशी भाषा अपने साथ विदेशी संस्कृति को लाती है, और आज भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति के संक्रमण से उत्पन्न दुष्परिणाम हम सभी के समक्ष है।

भारत की राष्ट्रीय एकता भारतीय भाषाओं से ही बचेगी, विदेशी भाषाओं से नहीं।भारतीय इतिहास में यदि 1857 की क्रान्ति की विफलता के कारणों पर विचार किया जाए तो ज्ञात होता है कि क्रान्तिकारियों के कूट संकेतों को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सम्प्रेषित करने के लिए सम्पूर्ण देश में एक भाषा व्यवहार की आवश्यकता थी, इसके अभाव में बहुत सी गुप्त सूचनाएँ प्रकट हो गईं, जिसके दुष्परिणामों से स्वतन्त्रता संग्राम आद्यन्त प्रभावित रहा। यहाँ की भाषा एवं संस्कृति से अनभिज्ञ विदेशी शासकों द्वारा भारत पर सहस्रों वर्षों तक शासन किया गया, वर्तमान में भी यत्र–तत्र ऐसी स्थिति शासन में देखने को मिलती है, शासन के प्रमुख पदों पर आसीन अनेक व्यक्ति ऐसे हैं जिनका भारतीय भाषाओं का ज्ञान शून्य है।

1850 में जन्में आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी इस पीड़ा को अनुभव करते हुए लिखा था– **निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल।बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय का शूल।।**

भौतिक उन्नति से पूर्व राष्ट्रीय एकता–अखण्डता एवं संस्कृति संरक्षण की चिन्ता इस देश के नागरिकों का परम कर्तव्य होना चाहिए। वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रीय–जीवन के लिए संस्कृत भाषा का संरक्षण एवं संवर्धन अपरिहार्य है। हम सभी को

माता और पिता आठ-आठ वर्ष के पुत्र व कन्याओं को विद्याभ्यास, ब्रह्मचर्य-सेवन और अच्छी शिक्षा दिये जाने के लिये विद्वान् और विदुषी स्त्रियों को सौंप दें। वे भी विद्या-ग्रहण करने में नित्य मन लगावें और पढ़ाने वाले भी विद्या और अच्छी शिक्षा देने में नित्य प्रयत्न करें। -महर्षि दयानन्द

thearyasamaj.org

विकृत सामन्ती संस्कृति की पोषक वृत्तियों को छोड़कर प्राचीन भारतीय स्वस्थ एवं गौरवशाली परम्परा की भूमि को अपनाना चाहिए। ऐसा करने से ही संस्कृतरक्षा रूपी परम पुण्य के भागी बनेगें–

संस्कृतरक्षापरंपुण्यं, संस्कृतरक्षापरंव्रतम्, संस्कृतरक्षा परो यागः, संस्कृतसेवारतो भवेत्।

वर्तमान में देशभर में केन्द्रीय विद्यालयों में छह से आठ तक की कक्षाओं में संस्कृत भाषा को तृतीय भाषा के रूप में अध्यापन सम्बन्धी केन्द्र सरकार के आदेश पर छिडी बहस सर्वविदित है। जो भाषा सर्वदा सर्वदा से प्रथम भाषा रही है वह आज तृतीय भाषा के रूप में अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए भी संघर्ष कर रही है। इसके जिम्मेदार हम सभी प्रबुद्ध नागरिक हैं जो उचित स्तर पर आवाज नहीं उठाते हैं। यह दुर्भाग्य है इस देश का कि यहां शासन द्वारा लिये गये निर्णयों से शासित जनता अवगत ही नहीं होती है। बड़े–बड़े बुद्विजीवी जर्मन भाषा की पेरोकारी कर जर्मन भाषा के अध्ययन से विद्यार्थियों को सुनहरे भविष्य के स्वप्न दिखा रहे हैं। जर्मन भाषा भाषी जर्मन एवं संस्कृत भाषा की सन्निकटता के अनेक प्रमाण प्रस्तुत कर भारत में जर्मन भाषा के शिक्षण का पक्ष रखते हैं। एक बार इसे स्वीकार भी कर लिया जाए तो यह प्रश्न स्वतः उत्पन्न है कि क्या इसी अपेक्षा के साथ संस्कृत भाषा को जर्मन देश के विद्यालयों में अनिवार्य भाषा अथवा तृतीय भाषा के रूप में पढाया जाता है? इस प्रश्न के उत्तर का अन्वेषण करने पर ज्ञात होता है कि जर्मन देश के विद्यालयों में संस्कृत एवं हिन्दी शिक्षण के लिए कोई स्थान नहीं है। इसी सम्बन्ध में लगभग तीन वर्ष पूर्व एक दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय सरकार द्वारा लिया गया, इस निर्णय की अनुपालना में देश के केन्द्रीय विद्यालयों में छह से आठ तक की कक्षाओं में विद्यार्थियों को जर्मन भाषा तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाने लगी। इस सम्बन्ध में यह विशेष रूप से विचारणीय है कि क्या नीति निर्धारकों द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची का अवलोकन किया गया था। यदि ऐसा किया होता तो संविधान के विरूद्ध इस प्रकार का निर्णय नहीं लिया जाता। ऐसा प्रतीत होता है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने प्रशासनिक स्तर पर तथ्यों को छुपाते हुए प्रस्ताव सरकार को प्रस्तुत किया, खैर जो भी हुआ वह राष्ट्रहित में नहीं था।

केन्द्रीय विद्यालयों में भाषा शिक्षण पर दृष्टिपात करन पर चौंकाने वाले तथ्य ज्ञात होते हैं। केन्द्र सरकार के इन विद्यालयों में अस्सी प्रतिशत में 'संस्कृत' नामक किसी भाषा का अध्यापन नहीं करवाया जाता है, बीस प्रतिशत विद्यालय ऐसे है जहाँ संस्कृत को तृतीय भाषा के रूप में पढाया जाता है, वह भी हिन्दी के विकल्प के रूप में अर्थात् यहाँ पर भी संस्कृत के अध्यापन की कीमत हिन्दी का परित्याग कर चुकाई जा रही है। दुर्भाग्य है इस देश की जनता का कि इस राष्ट्र में विदेशी भाषा अनिवार्य है एवं भारतीय भाषाओं का अध्यापन वैकल्पिक रूप में किया जाता है। इन विद्यालयों में कक्षा– ग्यारह बारह के स्तर पर पूरे देश में कहीं पर भी किसी भी रूप में संस्कृत नहीं पढाई जाती है और न ही इस हेतु पीजीटी शिक्षकों का कोई पद सृजित किया हुआ है। इस सन्दर्भ में यह भी ज्ञातव्य है कि भारत सरकार द्वारा संचालित नवोदय विद्यालयों में भी संस्कृत भाषा नहीं पढ़ाई जाती है।

उक्त चर्चा से यह आशय कदापि नहीं ग्रहण करना चाहिए कि हम जर्मन भाषा के विरोधी हैं। जर्मन भाषा का वैश्विक पटल पर अपना महत्व है, इसका अध्ययन–अध्यापन हो परन्तु 'संस्कृत' की कीमत पर नहीं।

देश की नवनिर्वाचित सरकार ने इस प्रसंग में कुछ सकारात्मक संकेत दिये हैं, जो सराहनीय हैं। इस कार्य के लिए शुभाशंसा प्रदान करने के साथ–साथ हम प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं सम्बन्धित विभाग की मन्त्री श्रीमती स्मृति ईरानी से अपेक्षा करते हैं कि 'संस्कृत' भाषा को अपना पुरातन गौरव पुनः लौटाने हेतु यथाशक्ति सद्प्रयास किये जाएँ।

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा

यज्ञ मीमांसा

भाग–3, गतांक से आगे.....

यज्ञ का आध्यात्मिक पक्ष :

जिस प्रकार अभ्युदय एवं निः श्रेयस् के योग से मोक्ष बनता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन एवं भौतिक जीवन मिलकर सम्पूर्ण जीवन का निर्माण करते हैं । इसलिए हमारा व्यावहारिक जीवन अपने आध्यात्मिक जीवन से नियंत्रित एवं संचालित होता है। यज्ञों पर विचार करते हुए शतपथ में कहा गया है कि भौतिक भाग एक प्रतीकात्मक व्यापार है। किन्तु अन्तर्याग और बहिर्याग (भौतिक याग) में पूर्ण सामंजस्य है । इस यज्ञ चक्र को संचालित रखने के लिए मन एवं वाक् की संगति की आवश्यकता बताई गई है (शतपथ 1.4.5.8–12) इनके संयोग के बिना संसार में किसी भी कार्य की संकल्पना व्यर्थ है । ऋग्, यजु मन्त्रों (वाक्) द्वारा समर्पित होने पर ही यज्ञाग्नि में आहुतियॉ सार्थक होती हैं और यज्ञ पूर्ण होता अग्नये स्विष्टकृते सुहुत हुते । (शतपथ 14.9.4.24) अतः मन के माध्यम से वाक् (मन्त्र) की कर्म (यज्ञ) मे परिणति ही पूर्ण और रूप–समृद्ध यज्ञ माना गया है । इसी प्रकार प्रजापति परमात्मा ने भी आदि तत्त्व सत् को मनस–तत्त्व के माध्यम से समृद्ध सृष्टि यज्ञ के रूप में प्रकट किया है (ऋग् 10.12, दयानन्द भाष्य) ।

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मानवीय संगठन, संगति एवं शक्तियों के मेल से सामाजिक सुख–समृद्धि और आनन्द के लिए यत्न , सद्व्यवहार, प्रशंसनीय कार्यों के लिए यत्न, आत्मा को पवित्र करने में होने वाली बाधाओं पर विजय आदि सब यज्ञ है । अतः जो बहुजन–हिताय कार्य करता है वही 'यज्ञकर्ता' की कोटि में परिगणित होता है । क्योंकि यज्ञ प्रजा के सुखों के लिए ही अनुष्ठेय है । यह यज्ञ न केवल हमारे शुभकार्य अपितु हमारे समस्त जीवन को अपनी परिधि में परिवेष्ठित कर लेता है। यज्ञ

अच्छी शिक्षा के बिना मनुष्यों के सुख के लिए और कोई भी आश्रय नहीं है। इसलिये सबको उचित है कि आलस्य और कपट आदि कुकर्मो को छोड़ के विद्या के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न किया करें । - महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

का बाह्य स्वरूप है कि यह पर्यावरण की शुद्धि और वृष्टि का साधन है । वस्तुतः यज्ञ परमात्मा का रूप है । यह परमात्मा की प्राप्ति का प्रमुख साधन है । मानव–हृदय में प्रसुप्तावस्था मे यज्ञाग्नि विद्यमान है, यज्ञ से यह यज्ञाग्नि उद्‌बुद्ध होती है जिससे मानव की देह–शुद्धि, इन्द्रिय–शुद्धि, चित्त–शुद्धि और आत्मा की शुद्धि इस प्रकार सर्वांगीण शुद्धि होती है ।

यज्ञ के दो प्रमुख कार्य हैं –

1. 'स्वाहा' और 'इदं न मम' की भावना जाग्रत करना – स्वाहा में स्व–स्वार्थ बुद्धि को, आ– पूर्णतया, हा– छोड़ना, अर्थात् स्वार्थ भावना का पूर्णतया त्याग करना। इसी प्रकार 'इदं न मम' अर्थात् इसमें मेरा कुछ नहीं का भाव है । निष्काम भाव से कर्म करना और फल की इच्छा का परित्याग करना यज्ञ की प्रारम्भिक शिक्षा है ।

आत्मसमर्पण – परमात्मा के चरणों में स्वयं को पूर्णतया समर्पित करना । यज्ञाग्नि से मानव–हृदय में आत्म–ज्योति प्रदीप्त होने से अज्ञानावरण नष्ट होने लगता है तथा चैतन्य का क्रमशः अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोष रूप विकास होने लगता है । इन कोशों से क्रमशः मानव की बुद्धि–शुद्धि होती है, जिसके फलस्वरूप मनुष्य परमात्मा के साथ आत्मीयता एवं एकात्मता की अनुभूति करने लगता है। परमात्मा के आनन्द में लीन होना या तल्लीनता की अनुभूमि मानव के लक्ष्य की प्राप्ति है । यह यज्ञ – विज्ञान का पारमार्थिक रहस्य है ।

क्रमशः.....

– डॉ. सुधीर कुमार शर्मा , जयपुर

ईश्वरीय ज्ञान 'वेद'

भारतीय परम्परा में जिस ग्रन्थ के प्रति सर्वाधिक श्रद्धा और विश्वास है, उस ग्रन्थ का नाम है "वेद" । आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यता है कि "वेद" सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। "वेद" का यदि पूर्वाग्रह त्याग कर अध्ययन किया जाए तो महर्षि दयानन्द की उक्त मान्यता से सहमत होना ही पड़ेगा । वेद का व्युत्पत्ति जनक अर्थ भी वेदों को सर्वज्ञानमय सिद्ध करता है। "वेद" पद की निष्पत्ति विद् ज्ञाने, विद् सत्तायाम्, विद्‌लृलाभे, विद्‌विचारणे इन धातुओं से होती है अर्थात् जिसमें सब प्रकार का ज्ञान है, जिसके द्वारा सब पदार्थों की प्राप्ति करते हैं, जिसके माध्यम से समस्त पदार्थों का विचार करते हैं वो वेद है । व्युत्पत्ति लभ्य इन अर्थों का मनन करने से वेद ज्ञान–विज्ञान का भण्डार सिद्ध होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखते हैं :–

"विदन्ति, जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दति अथवा विदन्ते लभन्ते, विन्दन्ति विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्याः यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः" ।

अर्थात् वेद वे हैं, जिनसे मनुष्य सब पदार्थों को जानते हैं, जिनसे मनुष्य विद्वान् होते हैं, ज्ञान प्राप्त करते हैं, जिनमें विचार करते हैं। आचार्य सायण ने तैत्तिरीय–संहिता की भाष्य भूमिका में लिखते हैं –

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते । एतं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता ।। इष्ट प्राप्त्यनिष्ट परिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः ।।

अर्थात् प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण से जो उपाय न जाना जा सके, उस परोक्ष उपाय को जो बताता है वह "वेद" है। तात्पर्य यह है कि परमार्थ सिद्धि के अलौकिक उपाय को बताने वाले, परोक्ष का ज्ञान कराने वाले, अगम ज्ञान को प्रकट करने वाले ग्रन्थ "वेद" हैं। वेदों की सर्वमान्यता और महत्ता का कारण ईश्वरीय ज्ञान है। यद्यपि सभी मतावलम्बी अपने–अपने ग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान ही घोषित करते हैं । ऐसी स्थिति में यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि वस्तुतः ईश्वरीय ज्ञान कौन से ग्रन्थ हैं ? आधुनिक युग के विद्वानों में महर्षि दयानन्द के विचार प्रामाणिक कोटि में आते हैं और उनकी दृढ़ मान्यता है कि वेद अपौरुषेय अर्थात् ईश्वर प्रदत्त हैं। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के "वेदोत्पत्ति विषय" नामक अध्याय में स्वयं वेदों में वेदों का ईश्वरीय ज्ञान होना सिद्ध करते हैं –

तस्माद्‌यज्ञात् सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दान्सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।। – यजुर्वेद 31/7 ।।

अर्थात् उस यज्ञमय, सर्वज्ञ, पूर्ण पुरुष, परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उत्पन्न हुए । इसी प्रकार अथर्ववेद मे एक रूपक के माध्यम से बताया गया है कि चारों वेदों का प्रदाता स्वयं ईश्वर ही हैं –

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् । सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्‌गरसो मुखम् । स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ।। – अथर्ववेद 10/23/4/20 ।।

अर्थात् जिससे ऋग्वेद प्रकट हुआ, जिससे यजुर्वेद प्रादुर्भूत हुआ, सामवेद जिसके लोमतुल्य और अथर्ववेद जिसके मुख सदृश हैं – बताओ वो कौन देव हैं ?यहीं आगे शतपथ ब्राह्मण के माध्यम से महर्षि दयानन्द ने लिखा –

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसित मेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्‌गरस :.....

इस प्रसंग में याज्ञवल्क्य ऋषि अपनी विदूषी पत्नी मैत्रेयी को उपदेश देते हैं कि ऋग्‌यजुसामाथर्व रूप वेद चतुष्टय श्वासनिःश्वास ही स्वाभाविक क्रिया के समान ही सृष्टि के आरम्भ में प्रकट और प्रलय के काल में बीजाङ्‌कुर के समान समाहित करता है। महर्षि दयानन्द के पूर्ववर्ती सायणादि विद्वान तथा परवर्ती अनेक विद्वान भी वेदों को ही ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करते हैं ।

– डॉ. रामपाल विद्याभास्कर

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने हारा है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह तथा अविद्या आदि दोषों के कारण सत्य को छोड असत्य की ओर झुक जाता है। -सत्यार्थ प्रकाश भूमिका

thearyasamaj.org

यात्रा वृत्तान्त – आचार्य ज्ञानेश्वर , आर्यवन , रोजड़

- 28 अक्टू. से 22 नव., 2014 तक सिंगापुर, बैंकाक, मलेशिया देशों की यात्रा की , यद्यपि 2 वर्ष पूर्व मैंने इन देशों की यात्रा की थी । किन्तु सा.आ.प्र. सभा, के प्रधान माननीय सुरेशचन्द्र जी के विशेष आग्रह पर तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के कारण पुनः यात्रा का कार्यक्रम बना लिया । सम्मेलनों में 300 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें यू.एस., यू.के., कनाडा, आस्ट्रेलिया, मॉरीशस आदि अनेक देशों के आर्य सज्जन भी सम्मिलित हुए। सिंगापुर आर्य समाज की स्थापना को 100 वर्ष हो गये तथा बैंकाक आर्य समाज को 75 वर्ष । हजारों किलोमीटर दूर देशों में, जब वैदिक आर्य परम्परा वाले व्यक्तियों, परिवारों, समाजो को प्रत्यक्ष देखते हैं तो हृदय में आनन्दातिरेक की अनुभूति होती है । कुछ छोटी–छोटी असफलताओं को छोड़कर सम्मेलन सफल रहा ।
- पाश्चात्य और पौर्व्य विकसित देशों की बाह्य चकाचौंध करने वाली भौतिक प्रगति को देखकर अधिकांश व्यक्ति प्रभावित होते हैं और वैसा ही बनने का विचार करते हैं, प्रयास भी करते हैं किन्तु सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि न होने के कारण वे आन्तरिक स्थिति का अवलोकन नहीं कर पाते हैं और भ्रान्त धारणा बन जाती है कि सुखी हैं, शान्त हैं, सन्तुष्ट हैं । किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। बिना आत्मा–परमात्मा को जाने, सच्चे वैदिक ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को चलाये बिना मनुष्य कितनी ही धन सम्पत्ति प्राप्त क्यों न कर ले, पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। दुःखों से घिरा रहता है। ।
- वैदिक ऋषियों ने ईश्वर का ध्यान, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्पुरूषों का संग, पुनर्जन्म, कर्मफल, समाधि, वैराग्य, व्रत, तप, संयम आदि आध्यात्मिक विषयों तथा सिद्धान्तों को ''सांपराय'' शब्द से इंगित किया है, जो मनुष्य इन विषयों का ज्ञान और तत्सम्बन्धी आचरण नहीं करते हैं वे ''मूढ़'' संज्ञक मनुष्य होते हैं, ऐसे मनुष्यों की मान्यता यह होती है कि ''This is the first and last life, there was no life before this life and there will be no life after this life.'' यही जीवन है, न इससे पूर्व जन्म था, न मरने के पश्चात् होगा । अपने इस चार्वाक / विरोचन / नास्तिकवादी सिद्धान्त के कारण अपनी बुद्धि, शक्ति, साधन, समय, चातुर्य, श्रम का पूर्ण रूप से इसी जीवन को, अधिकाधिक सामर्थ्यवान् बनाकर अधिकाधिक भोगों को भोगने का प्रयास करते हैं और इस एकांगी क्षेत्र में वे सफल हो जाते हैं। किन्तु इस जीवन के बाद सर्वथा विनाश है, अन्धेरा ही अन्धेरा है , दुःख ही दुःख है ।
- जब किसी व्यक्ति–समाज–राष्ट्र के जीवन का लक्ष्य ही भिन्न होगा, तो दिशा भी भिन्न होगी, मार्ग भी भिन्न होगा, साधन भी भिन्न होंगे और शैली भी । बुद्धिमान् व्यक्ति अन्य व्यक्ति के रूप, रंग, आकृति, बल, बुद्धि, सामर्थ्य , पद, प्रतिष्ठा, भौतिक सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि को देखकर यह नहीं मान लेता कि यह पूर्ण सुखी है, शान्त है। पूर्ण सुखी होने की कुछ कसौटियां हमारे ऋषियों ने निर्धारित की हैं, यदि व्यक्ति उन कसौटियाँ जो हमारे ऋषियों ने निर्धारित की हैं, यदि व्यक्ति उन कसौटियों पर खरा उतरता है तो वह सुखी हो सकता है, यदि उन पर व्यक्ति उत्तीर्ण नहीं होता है, तो वह निश्चित् रूप से अशान्त, चिंतित, भयभीत, दुःखी रहता है, चाहे बाह्य लक्षणों से दिखाई ना दे ।
- प्रेम मार्ग के पथिक, चाहे पश्चिम में हों या पूर्व में या अपने देश में, ये बिना श्रेय मार्ग के सिद्धान्त, शैली का अपनाये, पूर्ण सुखी हो ही नहीं सकते है, चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति कर लेवें । सच्चे ईश्वर तथा ईश्वराज्ञा को न मानने वाला व्यक्ति असामान्य / प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्ति / परिवार / समाज / राष्ट्र का अहित करने को समुद्यत हो जाता है । जिन मनुष्यों का अन्तः करण में ईश्वर के अस्तित्व का बोध नहीं होता है, अथवा जो शब्द प्रमाण वा अनुमान प्रमाण से ईश्वर को स्वीकारते तो हैं, किन्तु व्यवहार में ईश्वराज्ञा के विरूद्ध आचरण करते हैं, उनकी भी आत्मा में परमात्मा का प्रकाश विलुप्त हो जाता हैं। ऐसे व्यक्ति बुरे कामों को करते समय ईश्वर की ओर से भय, शंका तथा लज्जा–स्वरूप संकेतों का ग्रहण नहीं कर पाते हैं और वे स्वच्छंद होकर, निर्लज्ज होकर, पाप–अपराधों को करते रहते हैं ।
- हे परमेश्वर ! हम अपने से निम्न स्तर के मनुष्यों को देखकर खिन्न होते हैं, घृणा–ग्लानी करते हैं, किन्तु इससे क्या लाभ? जब आत्मनिरीक्षण करते हैं तो स्वयं में भी अनेक अवगुण, दिखाई देते हैं । अवगुण न हों या न्यून हों, फिर भी अन्यों के दोषों को दूर करने का साहस, उत्साह, पराक्रम हमारे में नहीं है। ये साहस, बल, पराक्रम आदि गुण तब तक पूर्णरूप से नहीं उभरेंगे, जब तक हम स्वयं दोष रहित नहीं होंगे । इसलिए अब तो हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि सर्वप्रथम हमारे समस्त दुर्गुणों को विनष्ट कर दो और समस्त भद्र गुणों से हमें परिपूर्ण कर दो । तब आपके विशेष ज्ञान–बल–सामर्थ्य से युक्त होकर न केवल अपने आर्यावर्त की, अपितु सम्पूर्ण विश्व की अवैदिक परम्पराओं को समाप्त करके उनके स्थान पर विशुद्ध वैदिक शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, खान–पान, आचार–विचार वाली गौरवमयी–अस्मिता की स्थापना करने में समर्थ हो जायेंगे और आपका ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का आदेश पूरा कर देंगे, इसी आशा विश्वास के साथ ।

श्री ज्ञानेश्वर आर्य

जिस व्यक्ति का पुत्र उसके नियंत्रण में हो, जिसकी पत्नी आज्ञानुसार काम करे और जो मनुष्य अपने कमाये हुए धन से सन्तुष्ट हो ऐसे व्यक्ति के लिए यह संसार ही स्वर्ग है। -आचार्य चाणक्य

thearyasamaj.org

आर्य समाज, कोटपूतली द्वारा 8 दिवसीय "वेद प्रचार एवं जनजागरण अभियान" का आयोजन

आर्य समाज, कोटपूतली द्वारा 5 से 12 नव. तक "वेद प्रचार द्वारा जनजागरण एवं स्वच्छता अभियान" कार्यक्रम का कोटपूतली तहसील कें इनेड़, दावहेडी, खड़ल, कोटपूतली चूरी, पनियाला, मालपुरा आदि गांवों में आयोजन किया गया। जिसमें यज्ञ, भजन के साथ वैदिक विद्वानों की विभिन्न सामाजिक विषयों पर कार्यशाला एवं चर्चा आदि कार्यक्रम होते थे। साथ ही प्रतिदिन किसी न किसी सार्वजनिक स्थान की सफाई भी करना सम्मिलित था । कार्यक्रम के दौरान गांव दावहेड़ी में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए सीकर सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के समय में इन कार्यक्रमों की विशेष आवश्यकता है, उन्होनें कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर इस देश की, मानवता की, महान् वैदिक ज्ञान–विज्ञान की ना केवल रक्षा की, अपितु उनका अत्यन्त प्रसार भी किया । उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज द्वारा उसी कार्य को आगे बढ़ाने का कार्य करना अत्यन्त सुखद है। अधिक से अधिक ग्रामवासियों को इनका लाभ लेना चाहिए। स्वामी जी ने स्वच्छता अभियान पर भी विशेष बल दिया । अन्य ग्राम में हुए कार्यक्रम में विराट नगर विधायक श्री फूलचन्द जी भिण्डा ने भी महर्षि दयानन्द एवं वैदिक संस्कृति पर अपने विचार व्यक्त किए । इस कार्यक्रम के प्रति ग्रामवासियों ने अत्यन्त उत्साह प्रकट किया और स्वच्छता अभियान में सहयोग करने के साथ–साथ दुर्व्यसनों से मुक्त होने का संकल्प भी लिया

– रमेश आर्य, मंत्री

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज,भगवती नगर, गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) द्वारा प्रसिद्ध वेद–विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री , अमेठी एवं आचार्या डॉ. प्रियम्वदा जी वेदभारती, आर्ष कन्या गुरूकुल, नजीबावाद, (हरिद्वार) के ब्रह्मत्व में 25 से 31 दिसम्बर, 2014 तक पुरानी अनाज मण्डी, प्रांगण में "विशाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ" का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भजन संगीत एवं वेदपाठ कन्या गुरूकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया जायेगा । 24 दिसम्बर, 2014 को 1 बजे होने वाले ध्वजारोहण एवं कलश यात्रा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि : श्री ज्ञानदेव आहूजा, विधायक, रामगढ़, अलवर; विशिष्ट अतिथि : श्री मानसिंह गुर्जर, विधायक, गंगापुर सिटी , अध्यक्ष : श्री हरिप्रसाद बौहरा, सभापति, नगर परिषद्, गंगापुर सिटी होंगे । दिनांक 28.12.2014 को स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, सांसद, सीकर का उद्बोधन का कार्यक्रम भी होगा।दिनांक 31.12.2014 को पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम का समापन किया जायेगा । यज्ञ के संरक्षक एवं प्रेरक आर्य वीर दल के संरक्षक पं. मदनमोहन जी आर्य , गंगापुर सिटी होंगे ।

– श्री कृपाशंकर घी वाले , यज्ञ संयोजक

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज, मोहन नगर, हिण्डौन सिटी, ; करौली द्वारा वैदिक धर्म के प्रचारार्थ "चतुर्वेद पारायण महायज्ञ" दिनांक 2 –28 दिस., 2014 रविवार तक आर्य समाज प्रांगण में आचार्य श्री शिवकुमार शास्त्री, गुरूकुल कोलायत – ; बीकानेर के ब्रह्मत्व में चल रहा है। जिसमें प्रतिदिन प्रातः 7.00 से 10.00 बजे तक एवं सायं 2.00 से 5.00 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन का कार्यक्रम होता है । यज्ञ की पूर्णाहुति 28 दिसम्बर, रविवार को प्रातः 8 बजे से होगी पश्चात् ऋषि लंगर का कार्यक्रम होगा ।

अन्तरंग सभा का उपवेशन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की अन्तरंग सभा का उपवेशन दिनांक 30–11–2014 रविवार को प्रातः 11.00 बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा भवन, राजापार्क , जयपुर में रखा गया था। लगभग 2 घण्टे चले इस उपवेशन की अध्यक्षता वरिष्ठ उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद आर्य ने की। उक्त मीटिंग में स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, सांसद, सीकर सहित सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सभा के सदस्यों की उपस्थिति में निम्नांकित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गए:

- विगत उपवेशन में लिए गए निर्णयों की सम्पुष्टि ।
- श्री अमरमुनि जी ने स्वास्थ्य सम्बन्धी निजी कारणों से आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया है । उनके त्यागपत्र पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया ।
- मंत्री पद रिक्त होने की स्थिति में अन्तरंग सभा ने सभा की गतिविधियों के सुचारू संचालन हेतु डॉ. सुधीर शर्मा, को आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री पद पर नियुक्त किया गया ।
- वेद प्रचार के सम्बन्ध में सभी आर्य समाजों को ये निर्देश दिए जाए कि "सभी आर्य समाज अपने स्तर पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन करें"।
- फरवरी माह में महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं बोधोत्सव पर जयपुर में प्रान्त स्तरीय कार्यक्रम करने का निश्चय हुआ ।

स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था, यह आर्य समाज ही था जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाडी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया, अगर आर्य समाज न होता तो भारत, भारत न होता -अटल बिहारी वाजपेयी

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

- युवाओं व बालकों में भारतीय संस्कृति, शूरवीरता, धैर्य, विनम्रता, विचारशीलता एवं नैतिक मूल्यों का विकास कर समाज परिवर्तन की दिशा में आर्य समाज की युवा ईकाई सार्वदेशिक आर्य वीर दल की महत्वपूर्ण भूमिका है अपनी इसी कर्तव्य का निर्वहन करने के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल देश के अनेक भागों में विभिन्न प्रशिक्षण एवं सेवा कार्यक्रम संचालित करता रहा है । इसी क्रम में संगठन की राजस्थान प्रान्तीय इकाई द्वारा प्रतिवर्ष दो आवासीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष का द्वितीय 7 दिवसीय शीतकालीन आवासीय ''योग–व्यायाम –प्रशिक्षण एवं चरित्र – निर्माण शिविर '' का आयोजन दिनांक 24 से 31 दिसम्बर तक ''चेतन विद्या मन्दिर उ.मा. विद्यालय , शास्त्री सर्किल, सुमेरपुर (पाली) में किया जायेगा । शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण 24 दिसम्बर को सायं 4 बजे तथा समापन समारोह 31 दिसम्बर को प्रातः 10 बजे आयोजित किया जायेगा । इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक अग्रांकित दूरभाष संख्या पर सम्पर्क कर सकते हैं :

  भवदेव श्शास्त्री – 9001434484 , केशवदेव शर्मा – 9413425435, जगदीश सुथार –9680690938, कानसिंह राणावत – 9460877890

- बीकानेर संभाग का 6 दिवसीय आवासीय '' योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर '' का आयोजन 24 से 30 दिसम्बर, 2014 तक महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय (डीएवी) , नई मण्डी, घड़साना (श्रीगंगानगर) में आयोजित किया जा रहा है । शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण सायं 3 बजे एवं समापन समारोह 30 दिसम्बर को प्रातः 10 बजे किया जायेगा । शिविर में भाग लेने के इच्छुक सम्पर्क करें :

  राजूराम गोदारा – 9672997965, अमित आर्य – 9929946469, वीरेन्द्र शास्त्री – 8107001485, सत्येदव आर्य – 9460392575, यशपाल – 9680889335, कालूराम आर्य – 9982723606

शिविर की गतिविधियाँ :

- प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक सुव्यवस्थित एवं संयत दिनचर्या का अभ्यास करवाना ।
- आत्मिक उन्नति हेतु ईशोपासना, सन्ध्या, ध्यान आदि का विधिवत् प्रशिक्षण ।
- पर्यावरणीय एवं सामाजिक उन्नति हेतु नियमित यज्ञ, वैज्ञानिक चिन्तन के विकास के साथ–साथ समाज एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध की भावना का विकास ।
- शारीरिक स्वास्थ्य हेतु योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, खेल–कूद, आदि का नियमित अभ्यास एवं प्रशिक्षण ।
- मानसिक उन्नति हेतु बौद्धिक एवं आध्यात्मिक प्रशिक्षण, विभिन्न प्रतियोगिताएं, आयोजन आदि ।
- आत्म–रक्षा हेतु : जूड़ो–कराटे, मार्शल आर्ट, अस्त्र–शस्त्र आदि का प्रशिक्षण ।

उक्त समस्त प्रकार के अभ्यास एवं प्रशिक्षण सुयोग्य विद्वानों एवं प्रशिक्षकों द्वारा दिया जायेगा ।

इसलिए अपने बालकों के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास हेतु आर्य वीर दल के शिविर में अवश्य भेजें । विस्तृत जानकारी के लिए उपर्युक्त दिए गए नम्बरों पर सम्पर्क करें ।

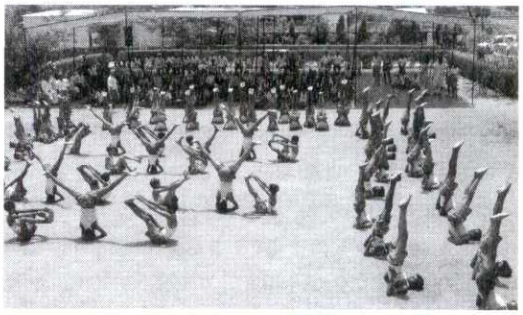

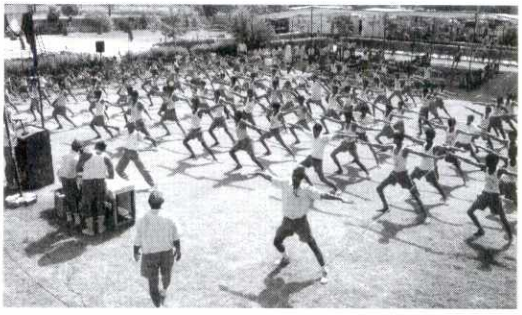

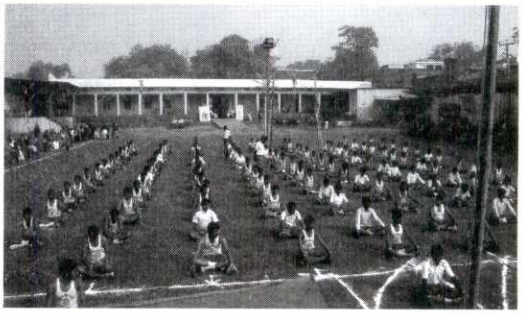

शिक्षकों को अपने अनुयायियों में खोज, रचनात्मकता, उद्यमिता और नैतिक भावना भरने को कार्य करना चाहिए। शिक्षक को अपने शिष्यों का आदर्श बनना चाहिए और इसके लिए उसे एक समर्पित और अनुशासित जीवन जीने की जरूरत होती है -एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

thearyasamaj.org

आर्य जगत् समाचार

आर्य वैवाहिक युवक–युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन

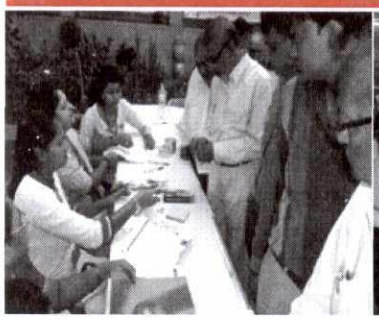

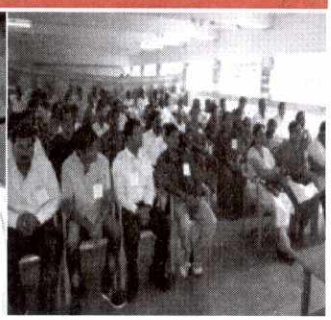

दिनांक 23 नवम्बर को गुजरात के आणंद में आर्य युवक–युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का सम्मेलन संस्था एवं आर्य समाज, आणंद के तत्वावधान में आयोजन किया गया। ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपसना के मन्त्रों व दीप प्रज्ज्वलन के साथ आरम्भ हुए कार्यक्रम में श्री सुरेश अग्रवाल , प्रधान, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना सम्बोधन दिया।

सम्मेलन संस्था के द्वारा आयोजित कुल 9 सम्मेलनों में अब तक 385 परिवार आपस में रिश्तों की डोर में बंधे हैं। इस अवसर पर परिचय विवरण पुस्तिका के किट–सेट का विमोचन किया गया । आर्य समाज जिला सभा कोटा व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से मुख्य अतिथि श्रीमान सुरेश चन्द्र अग्रवाल का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन हंसमुख भाई परमार व रामप्रसाद याज्ञिक ने किया। कार्यक्रम आयोजक आर्य समाज आणंद के मंत्री अशोक भाई पटेल ने सभी अतिथियों एवं आगन्तुकों व सहभागियों का आभार व्यक्त किया । शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– अर्जुनदेव चड्ढा

ओमान म सुल्तान के स्वास्थ्य के लिए हुआ महायज्ञ

मस्कट, 15 नवम्बर (वार्ता): ओमान के बीमार सुल्तान कबूस बिन सईद के बेहतर स्वास्थ्य के लिए भारत से आए 22 वैदिक ब्राह्मणों के दल ने यहाँ महायज्ञ किया। मेंगलूर के पूर्ण प्रज्ञा पीठ के ब्राह्मणों के दल ने सुल्तान की सलामती के लिए 5 दिन तक यज्ञ किया। वे इस दौरान सुल्तान के अतिथि के तौर पर वहाँ रहे। सुल्तान के एक सलाहकार, जो मूल रूप से गुजरात के निवासी है, ने इस महायज्ञ का आयोजन किया। यज्ञों और पूजा के लिए ब्राह्मणों को लगभग 30 लाख रू. की दक्षिणा मिली है। शाही परिवार के कुछ सदस्य भी यज्ञ में शामिल हुए। सुल्तान को इस बात पर पूरा भरोसा है कि इस यज्ञ से उनका स्वास्थ्य ठीक होगा।

पं. वासुदेव शास्त्री, जयपुर

उत्तराखण्ड सरकार की गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के साथ सहभागिता हेतु बैठक

उत्तराखण्ड राज्य के एडिशनल प्रिन्सिपल चीफ कन्सरवेटर ऑफ फोरेस्टस् श्री जयराज ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों, वैज्ञानिको एवं शोध छात्रों के साथ एक बैठक आयोजित की जिसमें उन्होनें जानना चाहा कि किस प्रकार गु0 का0 वि0 के वैज्ञानिक सरकार के साथ मिलकर राज्य के उत्थान में सहयोग प्रदान कर सकतें हैं । बैठक में विद्युत शव दाहगृह की उपयोगिता, गंगा में अस्थि प्रवाह, मूर्ति प्रवाह, फूल इत्यादि की वैज्ञानिकता तथा लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाने सम्बन्धी उपायों पर चर्चा की गई । इसके अतिरिक्त मुख्य रूप से प्राचीन वेद–विज्ञान व आधुनिक विज्ञान के विभिन्न विद्वानों व वैज्ञानिकों के मध्य समन्वय स्थापित कर सहभागिता के साथ जैव विविधता संरक्षण, जल संरक्षण व जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने सम्बन्धी उपायों पर भी चिन्तन किया गया । आई.एफ.एस. श्री जयराज जी ने सरकार की ओर से कुलपति के माध्यम से प्राप्त प्रस्ताव पर विचार करने का आश्वासन दिया ।

– डॉ. प्रदीप जोशी , जनसम्पर्क अधिकारी

सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन

महिला आर्य समाज, मानसरोवर जयपुर की ओर से दिनांक 13–16 नव., 2014 तक आर्य समाज भवन के निकट स्थित मानसरोवर पार्क में '' सामवेद पारायण यज्ञ'' का आयोजन किया गया । होशंगाबाद – म.प्र. के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी के ब्रह्मत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रातः 7.30 से 10. 30 बजे तक एवं सायं 2.30 से 5.30 बजे तक यज्ञ, भजन एवं प्रवचन आदि कार्यक्रम होते थे। वेदपाठ श्रीमती श्रुति आर्या व श्रीमती स्मृति आर्या द्वारा तथा श्री संदीप वैदिक जी , मुजफ्फर नगर से पधारे भजनोपदेशक द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुति दी गई । श्रीमती गायत्री जी आर्य की अध्यक्षता में 16 नवम्बर को 8 बजे से 2 बजे तक पूर्णाहुति का कार्यक्रम हुआ । जिसमें श्री संदीप जी सहित अनेक भजन गायकों ने अपनी प्रस्तुतियां दी, पुरुषार्थी जी ने वेद मन्त्रों की सुन्दर व सरल व्याख्या की । अन्य अनेक विद्वानों ने भी अपने–अपने विचार रखे । कार्यक्रम का संचालन संदीपन जी आर्य ने किया । इस अवसर सभी विद्वानों, भजन गायकों, सम्मानित अतिथियों का आर्य समाज की ओर से सम्मान किया गया । अन्त में आर्य समाज की प्रधान श्रीमती सरोज कालरा ने सभी का धन्यवाद दिया ।

– अनिल आर्य, जयपुर

मेरी सफलता इस बात में नहीं है कि ए या बी मेरे बारे में क्या सोचता है। मेरी सफलता इस बात में है कि मैं अपने काम में क्या कर दिखाता हूं। शिक्षा इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करती है। - होमी जहांगीर भाभा, वैज्ञानिक

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

आवश्यक सूचना

- आर्य्य मार्तण्ड के समस्त सदस्यों, पाठकों से निवेदन है कि अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं, कार्यक्रम आदि की विज्ञप्तियां, लेख, सूचनाएँ हमें aryamartand@gmail.com व dr.sudhirsharma@yahoo.com पर ई–मेल करें अथवा अग्रलिखित पते पर भेजें – डॉ. सुधीर शर्मा, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर–302018
- सभी से निवेदन है कि आर्य्य मार्तण्ड को प्रकाशनार्थ भेजी जाने वाली रचनाएं, लेख पूर्णतया मौलिक एवं अन्यत्र अप्रकाशित हों।
- आर्य्य मार्तण्ड को भेजी गई कोई भी रचना को प्रकाशित होने में अधिकतम 2–3माह तक का समय लग सकता है ।
- आर्य्य मार्तण्ड को प्रकाशनार्थ भेजी गयी किसी भी सामग्री के लिफाफे के ऊपर अथवा पत्र के ऊपर ''प्रकाशनार्थ'' अवश्य लिखें ।

– सम्पादक

प्रतिक्रिया

- आर्य्य मार्तण्ड का नवीनतम अंक 21 नव से 5 दिस. 2014 देखा, बड़ा ही प्रभावशाली और व्यवस्थित अंक लगा । प्रथम तो पत्रक की किस्म में सुधार किया गया है जो कि सराहनीय कदम है, पत्रक में प्रत्येक पृष्ठ पर दिये गये ध्येय वाक्य भी अच्छे लगे । इसमें प्रकाशित लेखों व समाचारों का स्तर भी अब उच्च स्तरीय है। इस कार्य की उन्नति निरन्तर होती रहे और हमें इसी प्रकार रुचिकर नवीनताओं से भरपूर अंक आगे भी मिलते रहेंगे ऐसी आशा है। आर्य्य मार्तण्ड में अब तक किये गए परिवर्तनों के लिए सम्पादक मण्डल का धन्यवाद ।

–सुभाषचन्द आर्य्य, पटवारी, जिलाधीश कार्यालय, जयपुर ।

- विगत दो अंकों से आर्य्य मार्तण्ड में निरन्तर हो रहे परिवर्तन सराहनीय एवं सुखानुभूति करवाने वाले हैं। यह सुखद है कि सभा का मुखपत्र अब नये आकर्षक रूप में नवीनता के साथ आ रहा है। इसके लिए सम्पादक मण्डल धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में मेरा एक सुझाव भी है कि इसके प्रत्येक अंक में परिवारों को सुखी बनाने के सम्बन्ध में कुछ विषय–सामग्री एवं पंचमहायज्ञों की वैज्ञानिक आधार पर व्याख्या अवश्य होनी चाहिए, जिससे कि यह पत्र और भी अधिक उपयोगी बन सके तथा जनमानस को वैदिक धर्म से जुड़ने में सहायक सिद्ध हो सके ।

– पं. देवव्रत शास्त्री, वैदिक पुरोहित, जयपुर।

आगामी कार्यक्रम

- 7 दिस., 2014 को सायं 4 बजे से 6 बजे तक सार्वदेशिक आर्य्य वीर दल , जयपुर जिला की स्थानीय इकाईयों द्वारा विभिन्न स्थानों पर ''मासिक आर्य्य वीर सम्मेलन एवं विचार गोष्ठियों'' का आयोजन ।
- 24–30दिस.,2014 सार्वदेशिक आर्य्य वीर दल की ओर से बीकानेर संभागीय ''योग, व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर ''का महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय (डीएवी), नई मण्डी, घड़साना में आयोजन।
- 24–31 दिसम्बर, 2014 सार्वदेशिक आर्य्य वीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय शिविर आर्य्य समाज, सुमेरपुर पाली में आवासीय शीतकालीन ''योग, व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर '' का आयोजन ।
- 25–31 दिस.,2014 तक पुरानी अनाज मण्डी, गंगापुर सिटी में ''यजुर्वेद पारायण महायज्ञ'' का आर्य्य समाज, भगवती नगर, गंगापुर सिटी द्वारा आयोजन ।
- 28 दिस., 2014 को प्रातः 8 बजे से आर्य्य समाज, मोहन नगर, हिण्डौन सिटी में 2 दिस., 2014 से चल रहे ''चतुर्वेद पारायण महायज्ञ'' की पूर्णाहुति व ऋषि लंगर ।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री-आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष - आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।